सफलता की कहानी

डिजिटल शिक्षा एवं पर्यावरण संरक्षण

शासकीय माध्यमिक शाला जहाँगीरपुरा

- प्रधानाध्यापक: श्री कैलाश कुमार झमटानी
- UDISE - 23330505602
- जिला - सीहोर
- विकासखण्ड - सीहोर
- संकुल केंद्र - शासकीय सुभाष उ. मा. वि. सीहोर
- राज्य - मध्य प्रदेश
- संपर्क नंबर - 9981612336
- Email- kailash190364@gmail.com

आकृति 1: विद्यालय

पृष्ठभूमि

शासकीय माध्यमिक शाला जहाँगीरपुरा मध्य प्रदेश जिला सीहोर तहसील सीहोर में स्थित ग्रामीण शाला है। यह शाला सीहोर जिला मुख्यालय से 7 किमी दूरी पर एवं इंदौर-भोपाल हाइवे से 2 किमी दूरी पर स्थित है। शाला में कक्षा 1 से कक्षा 8 तक कक्षाएं संचालित की जाती है।

क्र.	यूनिक कोड	नाम व ट्रेजरी कोड	पद	योग्यता
1	AA-8909	श्री कैलाश कुमार झमटानी	शाला प्रभारी एवं शिक्षक	M.A.(समाज शा.) B.Ed.
2	AA-8984	श्री सुबोध जायसवाल	मा. शिक्षक गणित	B.Sc.(गणित) B.Ed.
3	AA-8873	श्री अनिल शर्मा	सहा. शिक्षक	M.A.(समाज शा.) D.Ed.
4	BA-1049	श्रीमती गायत्री कौशल	माध्य. शिक्षक (विज्ञान)	B.Sc., M.A.(हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत),B.Ed.
5	AA-8992	श्रीमती भावना तिवारी	माध्य. शिक्षक (अंग्रेजी)	M.A.(English) B.Ed.
	AA-9331	श्रीमती साधना राय	माध्य. शिक्षक (संस्कृत)	M.A.(संस्कृत) D.Ed.
7	BA-2409	श्रीमती सीमा जोशी	प्राथ. शिक्षक	M.A.(राजनीति शा.) B.Ed.
8	AA-9701	श्रीमती धापू बनवारी	प्राथ. शिक्षक	M.A.(राजनीति शा.),D.Ed.
9	BY-1045	श्रीमती शोभा रावल	प्राथ. शिक्षक	M.A.(हिन्दी),B.Ed.

आकृति 2 विद्यालय स्टाफ

नामांकन

बालक	बालिका	कुल
116	87	203

भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक संदर्भ

शाला में वर्तमान में 12 कक्ष हैं जिसमें से 9 कक्ष अध्यापन कार्य के लिए उपयोग में लिए जा रहे हैं। शाला में बालक-बालिकाओं के लिए अलग-अलग टॉयलेट की सुविधा एवं पीने के लिए स्वच्छ जल की सुविधा भी उपलब्ध है। शाला में विद्यार्थियों के बेहतर शिक्षण हेतु वर्तमान में 2 IFPD पैनल एवं विद्यार्थियों के लिए पुस्तकालय की सुविधा भी उपलब्ध है। शाला में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है एवं 'माँ की बगिया' नाम से एक बाल-वाटिका भी शाला में है।

गाँव में आजीविका के लिए मुख्यतः लोग मजदूरी पर निर्भर हैं।

समस्या

पिछले कुछ वर्षों में शाला में विद्यार्थियों की उपस्थिति में निरंतर कमी एक बड़ा चिंता का विषय था। पढ़ाई के प्रति बच्चों की रुचि सीमित थी, जिसके कारण भी कई छात्र/छात्राएं नियमित रूप से शाला नहीं आते थे। कुछ तो मध्याह्न भोजन के बाद ही घर लौट जाते थे। शाला का वातावरण भी प्रेरक और आकर्षक नहीं था, जिससे बच्चों का मन वहाँ नहीं लगता था। इन कारणों से न केवल शैक्षणिक गुणवत्ता प्रभावित हुई, बल्कि शाला की सामूहिक ऊर्जा भी कमजोर पड़ रही थी।

समाधान की शुरुआत

शाला की उपरोक्त समस्याओं के समाधान की जिम्मेदारी प्रधानाध्यापक के नेतृत्व में शाला परिवार नें उठाई। सभी ने महसूस किया की बच्चों की पढ़ाई और शाला में रुचि बढ़ाने और बच्चों की नियमितता सुनिश्चित करने के लिए उन्हें शिक्षण प्रक्रिया को रोचक बनाना होगा एवं शाला के वातावरण को सुंदर एवं आकर्षक बनाना होगा। इसी क्रम में उन्हें शाला में बेहतर

शिक्षण माहौल तैयार करने के लिए शाला में डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने एवं शाला के वातावरण को हरा-भरा एवं साफ-स्वच्छ बनाने की आवश्यकता महसूस हुई।

समस्या समाधान की प्रक्रिया

आकृति 4: स्वच्छता के सामूहिक प्रयास

शाला प्रबंधन एवं प्रधानाध्यापक के नेतृत्व के द्वारा विभिन्न मंचों पर अपने शाला की आवश्यकताओं को साझा किया गया और इसी क्रम में उनके शाला को राज्य शिक्षा केंद्र मध्य प्रदेश की ओर से 2 interactive panel उपलब्ध करवाए गए। शाला में डीटीएच कनेक्शन लगवाया गया, साथ ही मुस्कान ड्रीम्स नाम के एक एनजीओ द्वारा शाला में कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों को पढ़ाने के लिए गणित एवं विज्ञान विषय का video content उपलब्ध करवाया गया। साथ ही संस्था के द्वारा शिक्षकों को digital content किस तरह से कक्षाओं में इस्तेमाल करना है और कैसे डिजिटल पाठ-योजना बनाना है इस विषय पर भी प्रशिक्षण प्रदान किया गया। एवं समय-समय पर संस्था के प्रतिनिधि सहयोग के लिए शाला में आते रहे। साथ ही प्रधानाध्यापक श्री झमटानी जी द्वारा शाला में पौधारोपण का कार्य करवाया गया एवं शिक्षकों के

आकृति 3: पर्यावरण को सहेजने का प्रयास

सहयोग से शाला में ‘माँ की बगिया’ के नाम से एक बगिया भी बनवाई गई। और साफ-सफाई सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए गए।

आकृति 5: माँ की बगिया

समाधान के लिए उठाए गए कदम

- IFPD पैनल का शैक्षणिक कार्यों हेतु उपयोग।
- मुस्कान ड्रीम्स द्वारा उपलब्ध विडिओ कंटेन्ट का इस्तेमाल।
- गूगल, यूट्यूब, डिजिटल बोर्ड एवं अन्य online पोर्टल का इस्तेमाल कर के शैक्षणिक कार्य करवाया गया।
- फॉर्मेटिव असेसमेंट के लिए मुस्कान ड्रीम्स द्वारा उपलब्ध करवाए गए class-saathi एवं PPT जैसे डिजिटल टूल का इस्तेमाल किया गया।
- शिक्षकों को डिजिटल डिवाइस के प्रयोग, डिजिटल पेडगोजी को कैसे परंपरागत शिक्षण के साथ जोड़े और डिजिटल पाठ-योजना पर प्रशिक्षण दिलवाया गया।
- शाला में साफ-स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया गया । हर कक्ष एवं मैदान में सूखे एवं गीले कचरे को रखने के लिए डस्ट्बिन रखे गए।
- शाला में पौधारोपण का कार्य करवाया गया एवं जनभागीदारी सहयोग से शाला में 'माँ की बगिया' के नाम से एक बगिया भी बनवाई गई।

इन सभी प्रयासों के बेहतर परिणाम शाला में देखने को मिले हैं।

आकृति 8: मुस्कान ड्रीम्स द्वारा दिए गए 'क्लास साथी' किट एवं क्लिकर्स का formative assessment में प्रयोग

आकृति 6: कक्षा-कक्ष गतिविधियों में बच्चों का प्रतिभाग

आकृति 6: डिजिटल बोर्ड का इस्तेमाल करते हुए शिक्षक

आकृति 8: मुस्कान ड्रीम्स द्वारा दिए गए वीडियो कंटेन्ट का प्रयोग

आकृति 9 : मुस्कान ड्रीम्स द्वारा दिए गए वीडियो कंटेन्ट का प्रयोग

आकृति 7: डिजिटल टूल्स का उपयोग बच्चों की क्रीऐटिविटी बढ़ाने के लिए

बदलाव

उपरोक्त क्रियाकलापों के कारण शाला में विद्यार्थियों की उपस्थिति में काफी सुधार देखा गया। बच्चों की पढ़ाई में रुचि में वृद्धि हुई है। साथ ही कक्षा-कक्ष की गतिविधियों में बच्चों की सहभागिता में काफी सुधार दर्ज किया गया है। क्यूंकि विद्यार्थी वीडियो कंटेन्ट के माध्यम से बेहतर तरीके से अवधारणाओं को समझ पा रहे हैं, इस कारण से वे अब अधिक आत्म विश्वास के साथ खुद को व्यक्त कर पाते हैं। शाला को जिले में सबसे अधिक डिजिटल कंटेन्ट का उपयोग करने के लिए मुस्कान ड्रीम्स संस्था द्वारा सम्मानित किया गया एवं प्रमाणपत्र भी प्रदान किया गया । साथ ही शाला का वातावरण बेहद सुंदर एवं आकर्षक हो गया है। शाला परिसर में काफी हरियाली भी देखी जा सकती है। जिससे बच्चों का मन शाला में अच्छे से लग रहा है।

Figure 1: मुस्कान ड्रीम्स द्वारा डिजिटल कंटेन्ट का सर्वाधिक एवं बेहतर इस्तेमाल के लिए बेस्ट स्कूल के रूप में प्रोत्साहित किया गया

Figure 2 ज़ोन स्तरीय विज्ञान प्रतियोगिता में द्वतीय स्थान के लिए शाला की छात्रा को पुरस्कृत किया गया

शाला परिसर पूर्व में

शाला परिसर वर्तमान में

परिणाम

- विद्यार्थियों की उपस्थिति में 20% कि वृद्धि देखी गई।
- 90 % विद्यार्थियों नें कहा है कि डिजिटल टूल्स के उपयोग के बाद उनकी पढ़ाई में रुचि बढ़ी है।
- 70 % विद्यार्थियों नें कहा है कि उनके आत्मविस्वास में वृद्धि हुई है।
- शाला को कंटेन्ट का बेहतर इस्तेमाल व सर्वाधिक उपयोग के लिए मुस्कान ड्रीम्स द्वारा प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ।
- 65 % विद्यार्थियों नें कहा है कि उनकी कक्षा-कक्ष की गतिविधियों में सहभागिता बढ़ी है।
- सभी 9 शिक्षकों के अनुसार विद्यार्थियों की पढ़ाई में रुचि बढ़ी है।
- सभी 9 शिक्षकों के अनुसार विद्यार्थियों की आत्मविस्वास में वृद्धि हुई है।
- सभी 9 शिक्षकों के अनुसार विद्यार्थियों की कक्षा-कक्ष की गतिविधियों में सहभागिता बढ़ी है।

प्रभाव/असर

प्रधानाध्यापक के नेतृत्व में एवं शाला में शिक्षकों के सहयोग के चलते उपरोक्त कार्य योजनाओं को धरातल पर बेहतर रूप से उतारा गया जिसका प्रभाव शाला की छवि पर स्पष्ट देखने को मिलता है। पालकों का शाला पर विश्वास बढ़ा है। शाला में पठन - पाठन के लिए बेहतर माहौल बना है। पालकों का पूर्ण सहयोग शाला को मिल रहा है। पालक पेरेंट्स टीचर मीटिंग में सक्रिय सहभाग कर रहे हैं एवं स्कूल के द्वारा की गई सभी पहल की सराहना भी करते हैं।

“शिक्षा हमारे भविष्य की नींव है, जिसे हमें मजबूती से निर्माण करना चाहिए।“

- अज्ञात

बदलाव की कहानी, शाला परिवार की जुबानी

"जब बच्चों ने 'मानव शरीर' पर एनिमेटेड वीडियो देखा, तो उन्होंने
पूछा– 'हमारे फेफड़े फूलते कैसे हैं?'. अब वे सिर्फ जवाब नहीं
चाहते, वे प्रक्रिया समझना चाहते हैं। विज्ञान अब उनके लिए
किताबों से बाहर की दुनिया है।"
– श्रीमती गायत्री कौशल, विज्ञान शिक्षिका

सत्र 2025 में स्टार्स प्रोजेक्ट के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त
कर सफल लीडर के रूप में नेतृत्व करते हुए।
डिजिटल शाला प्रोजेक्ट ने हमारे स्कूल को नई पहचान दी है। जब
हमें सर्वाधिक डेटा उपयोग के लिए सम्मान मिला, तो यह हमारे
शिक्षकों और छात्रों की मेहनत का प्रमाण था। अब स्कूल में
सीखने का माहौल ज़्यादा जीवंत और सहभागी हो गया है।"
**– श्री कैलाश कुमार झमटानी, HM, शासकीय माध्यमिक
विद्यालय जहांगीर पुरा**

सर और मैडम जब वीडियो से पढ़ाते हैं, तो
हमको बहुत अच्छा लगता है। और समझ में
भी अच्छे से आ जाता है। इसमें चित्र और
प्रेक्टिकल भी दिखता है । इससे सब समझ आ जाता है।

– शिवानी, कक्षा 8

डिजिटल टूल्स ने गणित को बच्चों के लिए खेल जैसा बना दिया है। जब हम fractions या geometry को विज़ुअल तरीके से दिखाते हैं, तो बच्चे तुरंत समझ जाते हैं। अब वे खुद से सवाल बनाते हैं और हल करने की कोशिश करते हैं।"

- श्री सुबोध जायसवाल (गणित शिक्षक)

टी वी से पढ़ने में मजा आता है।
उसमें कार्टून जैसे वीडियो से हमको पढ़ाते हैं तो
समझ भी अच्छे से आ जाता है और कोई
हमसे सवाल पूछता है तो हम
अच्छे से उतर दे पाते हैं।

- पूजा लोधी (कक्षा - ८)